REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

कबीर काव्य : भक्ति की अनमोल प्रोतस्विनी

"भक्ति द्राविड़ उपजि लाए रामानन्द प्रगट कियो कबीर सप्त द्वीप नव खण्ड।"

डॉ.समीर
विभागाध्यक्ष , स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ,
स्वामी प्रेमनन्द महाविधलय मुकेरियां (पंजाब).

सारांशः–

भक्ति शब्द 'भज्' धातु मे 'क्तिन' प्रत्यय के योग से बना । भारतीय वाङमय मे भक्ति का विवेचन विस्तार से हुआ है। व्याकरण में 'भजनं भक्ति', 'भागो भक्ति', और 'भजनं भक्ति' तीन प्रकार से इस शब्द को व्युत्पन्न निष्पन्न माना गया हैं। 'भजनं भक्ति' भगवान की गुण लीला का पुनः स्मरण और रसास्वादन हैं। 'भागो भक्ति' में भक्त भगवान का ही अंग बन जाता है। यहां वह पृथक् होकर भी परमात्मा के भाग में चला जाता हैं। 'भजन भक्ति' में भक्त संसार के मायाजाल और अविद्या का भंजन करता है। कबीर की भक्ति भावना में भक्ति के ये तीनों स्वरूप प्राप्त होते हैं। परमात्मा की, ब्रहा की गुण लीला का आख्यान, नाम भजन का आस्वाद, ब्रहा और जीव की पृथक्ता तथा सायुज्यता दोनों का विशद् निरूपण भी उनके यहां मिलता है और उनकी भक्ति–भावना में माया और अविद्या का भंजन तो है ही ।

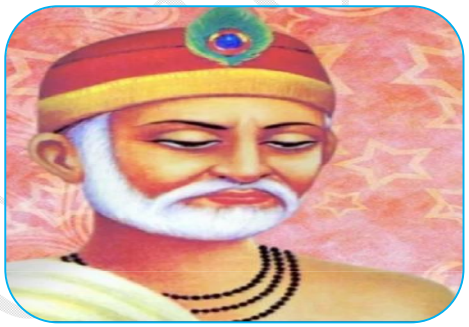

प्रस्तावनाः–

भक्ति का मूल तत्व प्रेम हैं। 'नारद भक्ति–सूत्र' के अनुसार भक्ति प्रेम–रूपा और अमृत स्वरूपा है।–"सत्वास्मिन् पर प्रेम–रूपा अमृत स्वरूपा च।" कबीर की भक्ति के मूल में इसी प्रेम की स्रोतस्विनी सक्रिया है। इसीलिए वे 'प्रेम के ढाई आखर' पर जोर देते हैं। बिना प्रेम के भक्ति नहीं की जा सकती । कबीर वाणी भक्ति की इस अनन्य प्रेमा शक्ति से ओत प्रोत है। यही प्रेम कभी उनके यहां कान्ता सम्मित मधुरा भक्ति के रूप में जन्म लेता है तो कभी दास्य भक्ति (स्वामी सेव्यभाव) को उजागर करते लगती है। कबीर स्वयं लिखते हैं

"हमन है इश्क मस्ताना, हमन दुनिया से यारी क्या,
रहें आजाद या जग में, हमन को बेकरारी क्या।"

उनकी मधुरा भक्ति में विरह और मिलन दोनों की स्थिति है। मधुरा भक्ति का यह विरह महत्वपूर्ण है।

"बिरह बिरह मत कहो, बिरह है सुल्तान,
जा घट बिरह न संचारे, सो घट जान मसान।"
उनके यहां यही मधुरा भक्ति मिलन में पुकारती है
"बालम आव हमारे गेहरे, तुम बिन दुखिया देह रे।"

और जब मिलन होने वाला होता है तो भक्ति मंगलाचार से विभूवित हो उठती है

"दुल्हिन गावहूं मंगलाचार,
हम पर आये हो, राजा राम भरतार।"

एक दूसरी दृष्टि से देखें तो विरह और मिलन वाली इस मधुरा भक्ति के मूल में प्रिय के दर्शन की प्यास बनी हुई है। मधुरा भक्ति को ही 'प्रेमा भक्ति' भी कहा गया है। कबीर ने स्वयं इस पद का प्रयोग किया है

"प्रेम भक्ति ऐसी कीजिए, मुखि अमृत बरिसे चन्द,
कहु कबीर जन भये खलासे, प्रेम भक्ति जिहि जानि।"

कबीर की भक्ति वैष्णव भक्ति है। वैष्णव भक्ति के आचार्यों में अनेक

नाम लिए जाते हें गर्ग, पाराशर, नारद, शाडिल्य, और अंगिरा। 'रामानुचार्य' और 'रामानन्द' ने 'नारदी–भक्ति' को आदर्श माना है। कबीर ने भी नारदी भक्ति को अपनाया है

" भगति नारदी मगन शरीरा। इही विधि भव तिरि कहे कबीरा।"
और
"भगति नारदी रिदे न आई, काछि काछि तन दीना।"

भक्ति में नाम स्मरण का बड़ा महत्व है। राम का स्मरण और जप कबीर की भक्ति का ही प्रतीक है–

"कबीर आपण राम कहे, औरा राम कहाये,
जिहि मुखि राम न उचरे, तिहि मुख फेरी कहाय।"

कबीर ने भक्ति के लिए सत्य, संतोष, धीरज की अपेक्षा पर और काम, क्रोध, आतुरता, तृष्णा, परनिन्दा, असत्य आदि की अपेक्षा पर बल दिया है। ऐसा भक्त गोविन्द का गुण गाने वाला और सम दृष्टि रखने वाला होता है।

कबीर के अनुसार भक्त की गुणवता निम्नलिखित है
"राम भज सो जानिए, जाके आतुर नाही,
सत सन्तोश लिये रहे, धीरज मन माही,
जनको काम क्रोध व्यापे नहीं, तृष्णा नजर न आवे,
प्रफुल्लित आनन्द में गोविन्द गुण गावे,
जनको परनिन्धा भावे नहि, अरू असत न भारवे,
काल कल्पना मेटि कर चरणों चित राखे।"

'नवधा–भक्ति' के नौ भेद भी कबीर की भक्ति को संतुप्ट करते है। ये भेद क्रमशः श्रवण, कीर्तन, नाम स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य , साख्य और आत्म निवेदन हैं। 'स्मरण' के उदाहरण में – ''मनसा वाचा कर्मणां कबीर सुमिरन सारा''। जैसी उक्तियां उद्धरणीय हैं। इसी तरह 'कीर्तन' करते हुए – "कबीर सूता क्या करे गुण गोविन्द के गाई।" कहने वाले कबीर अपनी भक्ति में असामान्य कीर्तन करते हुए दृप्टिगत होते है। प्रभु के गुणों के स्मरण से उन्हें तीर सा चुभता है और विरहानुभुति होने लगती है –"ज्युं ज्युं हरि गुण सांभलू, त्युं त्युं लागे तीर।" प्रभु का 'श्रवण' करते हुए कबीर अपने तन मन की सुद–बुध खो देते हैं – ''सबद सुनत जिव निकल्यां, भूलि गयी सब देह।'' 'वन्दना' के उदाहरण में– "माधो कब करिहो दाया।" जैसी अभिव्यक्ति 'अर्चना' के उदाहरण में– "केवल देखल मोहें देहुरि, तिल जैसे विस्तार, माहे पाती जल, माहे पूंजन हार।" 'दास्य' के उदाहरण में– "कबीर का स्वामी गरीब निवाज।", ''उस संमर्थ का दासोकदे न होई अकाज।'' इसी तरह 'पाद सेवन' के उदाहरण में– "राम चरण मनि भायो रे।" और साख्य' के उदाहरण में– "देखो भाग कबीर का, दोसत किया अलेख। "तथा 'आत्मनिवेदन' के उदाहरण में– "ज्युं हरि राखे त्युं रहु, जो देवे सो खाऊँ।" जैसी उक्तियां स्मरणीय हैं। 'नारद भक्ति सूत्र' में भक्ति के ग्यारह भेद किए गये हैं। कबीर की वाणी में पारबह्य के तेज का अनुमान करने में 'रूपासक्ति', परमात्मा को गुनियाला कन्त' कहने में कान्तासक्ति, परब्रहा को 'बाप राम' कहकर अपनी विनती सुनाने तथा हरि जननी मैं बाल तोरा कहने में 'वात्सल्यसक्ति', सतगुरु के बाण की मार खाने में और राम का सुमरिन करने में तन्मया सक्ति बहुत दिनों में राम की बाट जोहने और मिलन के लिए तरसने, मन में चैन नहीं पाने और राम वियोगी न जिये, जिये तो वाडर होय कहने में परमविरहर सक्ति प्राप्त होती है। नारद भक्ति सूत्र के अन्य तत्व वह ही हैं जो नवधा भक्ति मे प्राप्त होते है।

कबीर की भक्ति की कुछ अन्य स्वरूगत विशेषताएं भी विचारणीय हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है प्रपति अर्थात् सभी साधनों को छोड़कर परमात्मा की शरण में रहना। 'प्रपति' का तत्व अहंकार को नष्ट करता है। कबीर घोषित करते हैं–

''केवल नाम जपहु रे प्राणी परहु एक की सरना'' और यह भी – ''जो कुछ किया जो हरि किया, तार्थय भया कबीर, कबीर।

दूसरी विशेषता 'अनुकूलता का संकल्प' है– ''ज्यों हरि राखे त्युं रहे, ज्यों देवे सो खाई।''

तीसरी विशेषता प्रतिकूलता का वर्जन' है। ''कबीर काम–क्रोध, लोभ–मोह–मद, परनिन्दा, धन कुसंग, कपट जैसे प्रतिकूलताओं का, माया के सैनिकों का बार बार निषेध करते है– ''काम क्रोध दोऊ बिसमल कीना।''

इस भक्ति की चौथी विशेषता भगवान द्वारा की जाने वाली रक्षा मे विश्वास' है। उनको प्रतीति है कि उनके माथे पर प्रभु का हाथ है। इसलिए भय कैसा? **तभी** वे गाते हैं–

''मोहि भरोसा ईष्ट का बंदा नरक न जाई।''

तथा यह भी कहते हैं–

''अब मेरा दूजा कोई नही एक तुम्हारी आस।''

पांचवी विशेषता कार्पण्य की है। इसका आशय ब्रह्म के समक्ष अपने को दीन–हीन, अकिंचन समझना और निवेदन करना है। कबीर कहते हैं–

''जिहि घट राम रहे भरपूरी, ताकी मैं चरणन की धूलि।''

अन्तिम विशेषता 'निष्कामता' की है। इस पर कबीर ने बहुत बल दिया है। भक्ति कभी सहेतुम नही होनी चाहिए। प्रायः लोग, लोभ, पुत्र, धन आदि के लिए भक्ति करते हैं। इसको लक्षित करते हुए कबीर ने गाया है–

"जब लगि भक्ति सकामता, तब लग निर्बल सेव,
कहे कबीर वे क्यूं मिलिहें, निहकामी निज देव।।"

कहना न होगा कि कबीर का सम्पूर्ण व्यक्तित्व भक्ति के ताने बाने से बुना हुआ है। भक्ति ही उनकी अन्तर्वस्तु है और भक्ति ही उनकी वाचा शैली। भक्ति उनकी सांस है और भक्ति ही उनकी प्यास। भक्ति उनकी आस है और भक्ति ही उनका विश्वास। जिस ब्रहा को उन्होने पहुप बासते पातरा माना है उसी निर्गुण के प्रति भक्ति निवेदन काते हुए उन्होने उसे निर्गुण साकार बना दिया है और उन्होने यह देखा तक नहीं कि उनकी भक्ति की इस स्रोतस्विनी में कितना जल वैष्णवी गंगा का है और कितना पानी सूफी यमुना का।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 भारतीय चिन्तन परम्परा के दामोदरन।
2 हिन्दी साहित्य।
3 भारतीय चिन्तन परम्परा।
4 भक्ति आन्दोलन एंव भक्तिकाव्य डा0 षिव कुमार मिश्रा।
5 भक्ति आन्दोलन और सूरदास काव्य।
6 भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य।

डॉ.समीर
विभागाध्यक्ष , स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग , स्वामी प्रेमनन्द महाविधलय मुकेरियां (पंजाब).